

---

ShANmAturastavam

षाण्मातुरस्तवम्

Document Information

---

Text title : ShANmAturastavam

File name : ShANmAturastavam.itx

Category : subrahmanya, aShTaka

Location : doc\_subrahmanya

Transliterated by : Shankara and P. S. Ramachandran

Proofread by : Shankara, PSA Easwaran

Latest update : December 11, 2020

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 11, 2020

*sanskritdocuments.org*

---

षाण्मातुरस्तवम्



श्रीगणेशाय नमः ।

गौरीसहायसुहृदूरीकृतावयवभूरीषु वैरिषु तम-

स्सूरीकृतायुधनिवारीतदोष निजनारीकलालसमनः ।

क्रूरीभवत्तिमिरचारी हितापदुरी नीतिसूरि करुणा-

वारीणवारिधर, गौरीकिशोर, मम दूरीकुरुष्व दुरितम् ॥ १ ॥

मल्लीकृतत्रिदशमल्लीसदा सुदतिवल्लीकुचाङ्गणलसत्

सल्लीनकुङ्कुमरसोल्लीनवत्स, युधि भल्लीस्मयोऽसि दितिजैः ।

फुल्लीकुरुष्व स च वल्लीतगोधितलवल्लीविलोलबुधहृद्-

वल्लीनिवास, मम सोल्लीनकेकि हयसल्लीलपाहृदुदजम् ॥ २ ॥

प्राणीकृतस्वनरवराणीतभक्तजनवाणीशमुख्यसुमन-

श्श्रेणीसुजानुतलतूणीतमालतिमिराणीलचूचुकभरा ।

वाणीविलासमलिवेणीविपञ्चिमृदुवाणी तवांगरमणी

श्रोणीघना सुमति, शाणीतनोतु भृशमेणीविशालनयना ॥ ३ ॥

रागाभिषिक्तनिजकेशादिपादवपुराशापिशाचदहना

श्रीशातकुंभनिभपाशाङ्कुशाभरणनाशान्तकानुचर! भोः ।

भीशाङ्गुलाहरणगोशाबकावनतकोशाधिपाशु भगवन्

पाशाटवी भव हताशाशयावपिशिताशा हि भोगभुगमुम् ॥ ४ ॥

सन्तापसन्ततिनिशान्तावसन्तमयि कान्तायुगान्तररते,

किन्तावके हृदि नितान्ताकुलाशयमहन्तानपेतमवितुम् ।

किन्तामसं भवसि, चिन्तामणीरुचिरसन्तानपादपदव-

श्चिन्ताधुतान्तरुजमन्तादिहीन कुरु मान्तावकीनभजनम् ॥ ५ ॥

सीमाविहीनगुण सोमावचूड जितकामाभिमान सुमते!

भूमाधवादिनुत भूमासमान, पुरकामान्धकान्तकगुरो ।

नामालिजापिजनकामावसानफलदामाशमातनु विभो,

हेमारुणाहितनिकामातिभीम, गुह सामादि वेदविदयम् ॥ ६ ॥

वेदानुगीतनुतपादारविन्दयुगमादाय सेवनविधे-

रादावमुं सरसमादातुकाम शुभकेदारकेलिनिलये ।

तादात्म्यलीनमतिसादापनोद, सकलादानदैवततरो

भूदासकल्पलतिकोदारदाम कुरु मोदांबुराशिवसतिम् ॥ ७ ॥

किञ्चासुरद्विरदपञ्चाननप्रणवसञ्चारिहंससमने

किञ्चापलन्नमन, तुञ्चानुजीवि मम सिञ्चामृताभ कृपया ।

पञ्चाननप्रणय कञ्चापि शासिकति मुञ्चाशु बद्धकमतिं

पञ्चाशुगारिसुरपञ्चाननात्मजमिमञ्चापि पाहि सततम् ॥ ८ ॥

कालानलोपमित फालावलोकनक

blank. Missing line

वेलयुधो महति कोलाहलारवसुलीला तनोतु कुशलम् ॥ ९ ॥

इति श्रीनारायणगुरुविरचितं षाण्मातुरस्तवं सम्पूर्णम् ।


Encoded by Shankara and P. S. Ramachandran

Proofread by Shankara, PSA Easwaran

---

——  
*ShANmAturastavam*

pdf was typeset on December 11, 2020

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

